(शोध लेख नाम – वादक पद्धति से मानसिक चिकित्सा)

263

ISSN 2278 - 0327

Bi - Monthly
Refereed Journal

Approved by UGC

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

9805034336

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

9039804102

सम्पादक

रोहित पचौरी

9752529724

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

97546489..

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट चैन्नै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,

फेज - 3, लहारपुर,

भोपाल - 462043

मध्यप्रदेश

Web - www.bharatiyajyotisham.com

E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com

Mob : 9752529724, 9039804102

सम्पादकीय

शिक्षाजगत् की असमंजसता अकस्मात् समाप्त होने वाली नहीं है। शिक्षा के किसी एक क्षेत्र में असमंजसता है, ऐसा कहना भी सही नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी असमंजसता में चल रहा है। फिलहाल करोड़ों में मिलने वाली चिकित्साशिक्षा जैसे क्षेत्रों को छोड़कर केवल संस्कृत क्षेत्र का विचार पत्रिका की दृष्टि से युक्तियुक्त है।

दूसरे क्षेत्रों से तुलना करने के प्रयास में संस्कृत क्षेत्र में शिक्षा अपनी दिशा खोती हुई नजर आती है। आधुनिक दिखने के चक्कर में जो परिवर्तन लाने के प्रयास किए जा रहे हैं, वे दूरगामी दुष्परिणामों को देने के लिये सतत तत्पर है। संगणकीकरण के नाम से सभी टंकणकर्ता बनते जा रहे हैं। विज्ञान के हर पहलू का पूर्वरूप संस्कृत वाङ्मय में दिखाने की होड़ चली हुयी है। इतने अधिक प्रयासों में एक तरफ से परम्परागत शिक्षा लुप्त होती जा रही है, तो दूसरी तरफ बचे-खुचे मेधावी अपने जीवन को और उच्च-स्तरीय बनाने में लगे हुए हैं ।

शास्त्र का अध्ययन तभी सम्भव है, जब शास्त्र का प्रयोग सामाजिक स्तर पर तथा शैक्षिक स्तर पर किया जाये। आधुनिकता को संस्कृत क्षेत्र में ले आने का प्रयास सराहनीय है, किन्तु संस्कृत परम्परा को अन्य क्षेत्रों में नहीं ले जा पाना अहितकर ही है।

संस्कृत को संस्कृतेतर क्षेत्रों में ले जाने से पहले एक और कर्तव्य संस्कृतज्ञों पर है, शास्त्रों के बीच की दीवार को समाप्त करना तथा सभी शास्त्रों में आपसी ताल-मेल बनाना अत्यन्त आवश्यक है। संस्कृत जगत के सभी शास्त्र अन्योन्याश्रय सम्बन्ध रखते है। उस स्थिति में एक या दो शास्त्रों के अध्ययन से संस्कृत को समसामयिक नहीं बनाया जा सकता है।

पुराण, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष आदि सभी विषय शरीर के अंग जैसे हैं तथा उन सभी के समिष्टिरूप से ही शरीर चल सकता है। अत: अपने लेखन कार्य तथा पठन कार्य में अन्य शास्त्रों को स्थान देना उदारता नहीं बल्कि अनिवार्यता है।

आनो भद्रा: क्रतवो यान्तु विश्वत:

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of Bharatiyajyotisham Pvt. Limited. L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043

Editor - ROHIT PACHORI

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

वैदिक पद्धति से मानसिक चिकित्सा

डॉ. बृहस्पति मिश्र

प्राध्यापक, श्रीशक्तिसंस्कृतमहाविद्यालय,

श्रीनयनादेवी जी, विलासपुर (हि.प्र.)

अखिल ब्रह्माण्ड के अभी तक ज्ञात संसार के प्राणियों की करोड़ो जातियाँ विद्यमान हैं। जिसे भारतीय परम्परा चौरासी कोटि मानती है। इन सभी प्राणियों में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो अपनी नित्य आवश्यक गतिविधियों के अतिरिक्त भी अन्य गतिविधियाँ करता है। वे गतिविधियाँ यदि बुद्धि पूर्वक और तर्कपूर्वक होती हैं तो इन्हीं गतिविधियों से, कर्मों से मनुष्य मात्र अथवा प्राणिमात्र का चिरस्थायी हितसिद्ध होता है। मानवीय सभ्यताओं में इस तरह के कई प्रकार के कर्म हो सकते हैं। किन्तु भारतीय ऋषियों की ऋतम्भरा प्रज्ञा ने ऐसी सर्वहितकारी गतिविधियों सें सर्वप्रमुख कर्म यज्ञ को स्वीकार किया है । शतपथब्राह्मणकार ने भी ''**यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म**''[1] अर्थात् ''सभी श्रेष्ठ कर्मों में सबसे श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है'' ऐसा कहकर यज्ञ को प्रामाणिकता प्रदान की है ।

यज्ञ एक बहुत व्यापक अर्थ वाला शब्द है। जिसको भाषा वैज्ञानिक वैयाकरण समुदाय प्रमुखत: तीन कार्यों का समन्वित रूप कहता है - 1 - देवपूजा, 2 - सङ्गतिकरण, 3 – दान।[2] ये तीनों कार्य असंगरूप में भी यज्ञरूप में स्वीकृत हैं। किन्तु यदि ये तीनों कार्य उत्तम प्रकार से किसी विधा में समन्वित होते हैं तो उसे वैदिक यज्ञ के रूप में जाना जाता है। क्योंकि वेद ही वह आदि ज्ञानराशि[3] है जो मनुष्य जाति की सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञा के सुपरिणाम स्वरूप श्रौत ज्ञान के रूप में उपलब्ध है। इसलिए इस ज्ञानराशि को अपौपषेयज्ञान के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस वेदज्ञान का भौतिक रूप संहिता के रूप में प्राप्त होता है। जो कि संख्या में चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।[4] इन चार संहिताओं में तीन प्रकार के विषय-ज्ञान, कर्म, उपासना ये होने के कारण से वेदत्रयी के रूप में भी ख्याति प्राप्त है। इस संहिता रूप में प्राप्त ज्ञान अनन्त होने के कारण **अनन्ता: वै वेदा:**—अर्थात् ज्ञानराशि वेद अनन्त है—कहकर वेदों का अनन्तत्व भी प्रसिद्ध है।[5]

इन वेदों में विद्यमान छन्दबद्ध वाक्यों को मन्त्र नाम से जाना जाता है।[6] इन मन्त्रों के अर्थज्ञान के लिए विद्वानों में कई शैलियाँ प्रचलित हैं—जैसे आध्यात्मिक, आधिदैवत, आधियाज्ञिक आदि।[7] वेद मन्त्रों के आधियाज्ञिक अर्थों के अनुसार याज्ञिक परम्परा का विस्तार कि या जाता है। अत: वेद मन्त्रों के आधियाज्ञिक अर्थों को ध्यान में रखते हुए वैदिक ऋषिकल्प विद्वानों ने यज्ञों में मन्त्रों का विनियोग किया है, जिनका यज्ञीय कर्म करते हुए उपयुक्त परम्परागत विधि से उच्चारण किया जाता है।

वैदिक यज्ञों के विविध रूप हैं इनमें कुछ नित्य करणीय तथा कुछ नैमित्तिक करणीय रूप से दो प्रकार से हो सकते हैं। नित्य करणीय यज्ञों का बहुत महत्त्व है। अत: इन्हें महायज्ञ की संज्ञा प्रदान की है । यह संख्या में पाँच हैं इनके नाम—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्यदेव यज्ञ है। आदि स्मृतिकार मनु कहते हैं—''**पञ्चैतान् तु महायज्ञान् यथाशक्तिर्न हापयेत्**''[8] अर्थात् इन पाँच महायज्ञों के विषय में पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि ये पाँच महायज्ञ कभी भी छूट ना जाये।

इन पाँच यज्ञों में देवयज्ञ का स्वरूप अग्निहोत्र यज्ञ है अर्थात् वैदिक परम्परा से मन्त्रोच्चारण पूर्वक अग्नि प्रज्वलित करते हुए कई प्रतीकात्मक कर्मों के साथ किन्हीं विशिष्ट वस्तुओं की अग्नि में आहुति प्रदान की जाती है। इस यज्ञ का महत्व अत्यधिक है जैसा कि शतपथब्राह्मण प्रमाणित करता है ''**मुखं वा एतद्यज्ञानां यदग्निहोत्रम्**''[9] अर्थात् अग्निहोत्र यज्ञ अन्य सभी यज्ञों में मुख के समान है - मुख्य है। जैमिनीय ब्राह्मणकार कहते हैं कि ''**सर्वस्मात्पाप्मनो निर्मुच्यते स य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति**''[10] अर्थात् जो विद्वान् पुरुष दैनिक अग्निहोत्र करता है वह सभी प्रकार के पापो (दोषों, प्रदूषण की हानियों) से छूट जाता है। मुण्डकोपनिषद् के ऋषि का आदेश-निर्देश है कि-

यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासते ।
एवं सर्वाणि भूतानि अग्निहोत्रमुपासत ।।[11]

अत एव इस यज्ञ का अत्यधिक प्रचार होने के कारण से सम्पूर्ण विश्व में भारतीय परम्परा अग्निपूजक के रूप में प्रसिद्ध है।

इस देवयज्ञ रूपी अग्निहोत्र में यज्ञाङ्ग रूप में विशिष्ट मन्त्र, विशिष्ट कर्म, विशिष्ट आहवनीय वस्तु हैं। इनका वैज्ञानिक रूप में अत्यधिक महत्व है और इस विषय पर जितने शोध-परीक्षण हो रहे है उससे और अधिक से अधिक महत्त्व हमारे सामने आते जा रहे हैं। जिससे विशुद्ध वैदिक भारतीय परम्परा को भी ढोंग और असामाजिक भावुकतापूर्ण मानने वाला तथा कथित उच्चशिक्षित नवयुवा का तर्कशील मन एवं अहंकारयुक्त बुद्धि